श्रीवल्लभीय ग्रन्थमाला पुष्प-८

गो. श्रीहरिरायजी प्रणीत

# दोसौ बावन वैष्णवन की वार्ता

तीन जन्म की लीला भावना वाली ]

★

## तृतीय खण्ड

★

सम्पादक :
गो. श्रीब्रजभूषण शर्मा
द्वारकादास परीख

★

प्रकाशक :
शुद्धाद्वैत एकेडमी, कांकरौली

प्रकाशक : द्वारकादास परीख
मंत्री :
अष्टछाप स्मारक समिति, कांकरौली

*

प्रथम संस्करण
सम्वत् २०१० विक्रम
वल्लभाब्द ४७६

सर्वाधिकार प्रकाशक
के
स्वाधीन है

मूल्य :
रु. १०-०-०

*

ता. २४-८-५३.

मुद्रक : पं. मोतीदासजी चेतनदासजी,
कबीर प्रेस-शीयाबाग, बड़ौदा.

जल की गागरि डारि आउ। और वाकौ मोल ले आउ। तब रानी साहूकार के घर आई। पाछें सेठानी सों कहे, जो-ल्याओ तुम्हारे श्रीठाकुरजी के जल की गागरि भरि ल्याऊं। तब सेठानी ने गागरि दीनी। सो जल भरि ल्याई। तब वा सेठानी ने वामें सों एक झारी मंगला की भरी। पाछें रानी ने कही, जो-याकौ मोल मोकों देऊ। तब सेठानी ने कही, जो-दरसन करि। तब वाने दरसन करे। तब सेठानी ने रानी सों कही, जो-हमारे घर में हैं सो सब तू ले। परि मोल तो न दियो जाय। तब रानी ने कही, मैं राजा सों पूछि आऊं। तब जाय कै राजा सों पूछी। तब राजा ने कही, जो-अब तू ही अपने मन में समझि ले, जो-झारी भरिवे कौ, सेवा करिवे कौ कहा फल है? अब तेरी इच्छा में आवे सो करि। इच्छा में आवे तो सेवा करि, झारि भरि, इच्छा में आवे तो ऐश करि। तब रानी ने कही, जो-मैं तो झारी ही भरिवो करूंगी। सो वे राजा-रानी सदैव सेवा करते। सो प्रभुजी अनुभव जतावते।

भावप्रकाश—सो या वार्ता में सेवा कौ स्वरूप जताए, जो-सेवा की बरोबरि तीन लोक में कोई पदार्थ-फल नाहीं। तातें वैष्णव कों सेवा न छोरनी।

सो वे राजा-रानी श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते। सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥२३७॥

* * *

**अब श्रीगुसांईजी के सेवक पृथ्वीसिंघजी, बिकानेर के राजा कल्याणसिंहजी के बेटा, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—**

भावप्रकाश—ये राजस भक्त हैं। लीला में इन कौ नाम 'प्रभावती' है। ये 'श्रुतिरूपा' तें प्रगटी है, तातें उन के भावरूप हैं।

ये पृथ्वीसिंहजी बिकानेर के राजा कल्यानसिंहजी के उहां जन्मे। सो बालपने सों इन कौ चित्त साधु-संगति में रहे। देस-देस के साधु उहां आवते। तिनसों

ये मिलें। सो ये राजा भए। तब प्रथम ही ये गोकुल-मथुरा की यात्रा कौं चले। सो मथुराजी में आए। तब चोबेन सों पूछे, जो-ऐसे कोई महापुरुष बतावो जासों मिलिये। तब चोबेन ने कही, जो-राजा! यों तो बड़े बड़े महापुरुष या ब्रजमंडल में हैं, परि गोकुल में श्रीगुसांईजी विट्ठलनाथजी बड़े प्रसिद्ध हैं। बड़े बड़े राजा, संत, महात्मा, गुनी, स्वामी सब इन की वंदना करत हैं। तातें उन तें मिलो तो आछौ है। तब राजा तत्काल श्रीगोकुल आए। सो ता समै श्रीगुसांईजी आपु ठकुरानी घाट पर संध्यावंदन करि रहे हे। सो राजा कौं श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो तेजःपुंज अति उज्ज्वल अलौकिक दरसन भए। सो राजा दरसन करि कै विस्मित होइ रह्यो। पाछें अपने मन में कहे, जो-ऐसें तेजस्वी पुरुष के दरसन तो आज तांई या पृथ्वी मंडल पें भए नाहीं। इतने में श्रीगुसांईजी आपु संध्यावंदन करि चूके। तब आपु राजा की ओर देखे। तब राजा श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि बिनती किये, जो-महाराजाधिराज! कृपा करि मोकों सेवक कीजिए। आज मेरो जन्म सुफल भयो। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि राजा कों नाम सुनाइ सेवक किये। पाछें एक व्रत कराय निवेदन करवाए। पाछें राजा कों आप कहे, जो-राजा! अब तुम घर जाय भगवत्सेवा करो। पाछें श्रीगुसांईजी आप राजा कों श्रीबालकृष्णजी कौ स्वरूप पधराय सेवा की सब रीति बताए। और आशीर्वाद दिए, जो-तुम कों काल कबहू बाधा न करेगो। श्रीठाकुरजी के सदा सन्मुख रहोगे। पाछें राजा प्रसन्न होंई अपने देस आए। सो भगवत्सेवा प्रीतिपूर्वक करन लागे।

**वार्ता प्रसंग—१**

सो वे पृथ्वीसिंहजी कविता बोहोत करते। सो उनने कवित्त, सवैया, दोहा, चोपाई ऐसे अनेक प्रकार की कविता रची हैं। और 'रुक्मनिबेल' और 'स्यामलता' इत्यादि ग्रंथ हू बनाए हैं। सो राजा कौ मन श्रीठाकुरजी के सिवाय और ठौर जातो नाहीं। इन कौ चित्त ठाकुर में ऐसो गढ़ि गयो जो संसार के विषय सब छूटे। सो अपनी रानी कों हू पहचानि न सकै। ऐसो सेवा में राजा मगन रहे, और परदेस जाइ तब मानसी करे।

सो एक समै राजा परदेस गए। तब बिकानेर के ऊपर शत्रु

चढि आए। तब दोनों ओर ते शत्रु ने घेर लिए। तब श्रीठाकुरजी ने तीन दिन तांई शत्रुन तें लडाई करी। सो ठाकुर के मंदिर के किवाड़ तीन दिन तांई भीतर ते बंद रहे। काहू तें खुले नाहीं। पाछें चौथे दिन जब शत्रु भाजि गए तब मंदिर के किवाड़ खुले। सो यह बात राजा नें परदेस में मानसी करत में जानी। सो उन ने दीवान कों लिखि पठाई। सो दीवान पत्र बांचि कै चकित व्है रह्यो। सो राजा पृथ्वीसिंघजी ऐसे श्रीगुसांईजी के कृपापात्र भगवदीय भए।

वार्ता प्रसंग—२

बोहारि राजा पृथ्वीसिंघजी कों पृथ्वीपति दिल्ली बुलाए। सो राजा पृथ्वीपति के पास दिल्ही आए। तब माला-तिलक-छापा सब करि कै आए। तब बादशाह पृथ्वीसिंघजी कों देखि कै मन में बहोत प्रसन्न भयो। कहे, जो-देखो! इन कों अपने गुरु पै कैसो विश्वास है। पाछें बादशाह राजा कों काबुल की ओर लडाई में जाइवे की कही। तब राजा ने बिचार कियो, जो-मेरी मृत्यु तो अमुक दिन मथुरा में विश्रांत घाट पे होइवे वारी है। सो अब कैसें करे? फेरि श्रीगुसांईजी कै चरनारविंद कौ ध्यान करि राजा काबूल गयो। सो उहां थोरे ही दिन में लड़ाई जीति कै सांढनी पें बैठि के उहां ते चले। सो दोई दिन में मथुरा आई कै वाहि दिना देह छोड़ी। सो यह बात बादशाह ने सुनी। तब बादशाह ने बोहोत खेद कियो, जो-ऐसे राजा माकों मिलने कठिन हैं।

भावप्रकाश—या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-जिनकों गुरु कौ आश्रय दृढ होंई, तिनकौ सर्व कार्य सिद्ध होंई। तातें वैष्णव कों गुरु कौ दृढ आश्रय राखनो।